International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 14-05-2025, Accepted: 13-06-2025, Published: 28-06-2025
Volume 11, Issue 2, 2025, Page No. 85-86

वर्तमान संदर्भ में 'गोदान' उपन्यास की प्रासंगिकता

राजू गौड़
हिंदी विभाग, गुवाहाटी यूनिवर्सिटी, असम, भारत।

सारांश
मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित 'गोदान' उपन्यास भारतीय ग्रामीण समाज की आर्थिक, सामाजिक और नैतिक वास्तविकताओं का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। उपन्यास का मुख्य पात्र होरी एक कृषक है, जो जीवन भर अपने सपनों और सामाजिक कर्तव्यों के बीच संघर्ष करता है। उपन्यास में किसानों की गरीबी, जातिगत शोषण, भ्रष्ट धार्मिक व्यवस्था, महिलाओं की स्थिति और वर्ग–संघर्ष जैसी समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से उकेरा गया है। आज के वर्तमान समाज में भी ये सभी मुद्दे — जैसे किसानों की आत्महत्याएँ, आर्थिक विषमता, जातीय भेदभाव, नारी उत्पीड़न और नैतिक पतन — ज्यों के त्यों उपस्थित हैं। शहरीकरण और तकनीकी प्रगति के बावजूद, ग्रामीण भारत अब भी 'गोदान' के यथार्थ से जूझ रहा है। इस दृष्टि से 'गोदान' केवल एक साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि एक सामाजिक दस्तावेज है, जिसकी प्रासंगिकता आज भी उतनी ही सजीव और प्रेरणादायक है।

मूल शब्दः गोदान उपन्यास आज के समय में, होरी आज के संदर्भ में, प्रेमचंद का अन्तिम उपन्यास गोदान का महत्व, कृषक परिवार का कष्ट, धनिया का साहस, गोदान उपन्यास का यथार्थता, आज के युग में गोदान,

हिंदी साहित्य में मुंशी प्रेमचंद का स्थान यथार्थवाद के प्रमुख स्तंभों में है। उन्होंने भारतीय समाज के उस वर्ग की पीड़ा, संघर्ष और संवेदना को अपनी लेखनी से उजागर किया, जिसे समाज अक्सर उपेक्षित कर देता है। प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' को उनके साहित्यिक जीवन की पराकाष्ठा माना जाता है, जिसमें भारतीय ग्रामीण जीवन की सच्चाइयों को अत्यंत मार्मिकता और स्पष्टता से प्रस्तुत किया गया है।

'गोदान' केवल एक कृषक की कहानी नहीं, बल्कि उस समूचे समाज की त्रासदी है जहाँ नैतिकता, परंपरा और सामाजिक कर्तव्य जैसे आदर्श व्यक्ति के अस्तित्व पर भारी पड़ते हैं। उपन्यास का नायक होरी उस भारतीय किसान का प्रतीक है, जो कठिनाइयों, अभावों और शोषण के बावजूद अपने मूल्यों से समझौता नहीं करता और अंततः एक "गाय" की आकांक्षा लिए हुए जीवन को खो बैठता है।

जब हम 'गोदान' को वर्तमान सामाजिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं, तो पाते हैं कि प्रेमचंद की यह रचना आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी वह अपने समय में थी। आज भी भारत का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण है, जहाँ किसान कर्ज़, बेरोज़गारी, असमानता और व्यवस्था के अन्याय से जूझ रहा है। शहरीकरण और तकनीकी विकास के बावजूद, समाज में व्याप्त विषमता, जातिगत भेदभाव, महिला उत्पीड़न और सामाजिक नैतिकता का संकट 'गोदान' की घटनाओं से मेल खाता है। इस प्रकार, यह उपन्यास न केवल साहित्यिक दृष्टि से मूल्यवान है, बल्कि सामाजिक और मानवतावादी दृष्टि से भी आज के युग के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इस शोध में हम यह विश्लेषण करने का प्रयास करेंगे कि 'गोदान' में चित्रित स्थितियाँ आज के संदर्भों में कितनी प्रासंगिक हैं, और यह उपन्यास आज के पाठकों को किस प्रकार चेतना, संवेदना और सुधार की प्रेरणा देता है।

कृषक जीवन और आर्थिक शोषण

'गोदान' का नायक होरी, भारतीय किसान की जीवंत प्रतिमा है, जो अपना सारा जीवन एक गाय खरीदने और उसे पालने के सपने में ही गुजार देता है। वह कर्ज के बोझ, सामाजिक रीति–रिवाज़ों और व्यवस्था के शोषण से ग्रस्त रहता है।

वर्तमान संदर्भ

आज भी भारत के लाखों किसान कर्ज, सूखा, न्यूनतम समर्थन मूल्य की कमी, और आत्महत्याओं की समस्या से जूझ रहे हैं। सरकारी योजनाएं और ऋण–माफी जैसे कदम उठाए तो गए हैं, लेकिन ज़मीनी हकीकत अभी भी 'गोदान' के समय की स्थिति से बहुत अधिक नहीं बदली है।

जाति व्यवस्था और सामाजिक भेदभाव

प्रेमचंद ने उपन्यास में पंडित, ब्राह्मण, अहीर, चमार और दलित वर्गों की स्थिति को बेझिझक दिखाया है। होरी एक पिछड़ी जाति का किसान है जो पंडितों और जमींदारों के शोषण का शिकार होता है।

वर्तमान संदर्भ

आज भले ही कानूनन समानता है, लेकिन जातिगत हिंसा, आरक्षण पर विवाद, और सामाजिक भेदभाव आज भी हमारे समाज का हिस्सा हैं। दलित उत्पीड़न की घटनाएं समाचारों में आम हो गई हैं, जिससे यह साफ़ होता है कि गोदान की यह थीम आज भी उतनी ही प्रासंगिक है।

नैतिकता बनाम भौतिकता

गोदान में पात्रों के चरित्र — जैसे राय साहब, मिस मालती, खन्ना, पंडित दातादीन कृ के माध्यम से यह दिखाया गया है कि कैसे नैतिक मूल्यों की बलि चढ़ाकर लोग धन, पद और प्रभाव के पीछे भागते हैं।

वर्तमान संदर्भ

आज की उपभोक्तावादी संस्कृति में सफलता को केवल धन और भौतिक साधनों से आंका जाता है। चाहे वह राजनीति हो या कॉर्पोरेट दुनिया — नैतिकता को आज भी लालच, भ्रष्टाचार और छल के नीचे दबा दिया गया है।

नारी जीवन और उसकी भूमिका

धनिया जैसी महिला पात्र अपने संघर्ष, आत्मसम्मान और समझदारी के लिए अद्वितीय है। वहीं मालती शिक्षित, आत्मनिर्भर

और स्वतंत्र विचारों की महिला है। दोनों के माध्यम से प्रेमचंद ने भारतीय महिला की दो छवियाँ प्रस्तुत की हैं।

वर्तमान संदर्भ

आज भी महिलाएं दोहरी भूमिका निभा रही हैं — घर और बाहर दोनों जगह। हालांकि शिक्षा और अधिकारों में सुधार हुआ है, लेकिन घरेलू हिंसा, लैंगिक असमानता, कार्यस्थल पर उत्पीड़न जैसी समस्याएँ यह दर्शाती हैं कि प्रेमचंद का चित्रण आज भी यथार्थपूर्ण है।

शहरी बनाम ग्रामीण जीवन

'गोदान' में शहर और गाँव दोनों के जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है। गाँव में संघर्ष और आत्मीयता है, जबकि शहर में स्वार्थ, दिखावा और प्रतिस्पर्धा हावी है।

वर्तमान संदर्भ

आज शहरीकरण ने ग्रामीण संस्कृति को प्रभावित किया है, लेकिन गाँवों की उपेक्षा आज भी एक बड़ी समस्या है। मूलभूत सुविधाओं की कमी, बेरोज़गारी और पलायन जैसी समस्याएँ ग्रामीण भारत की बड़ी चुनौतियाँ हैं।

वर्ग–संघर्ष और सामाजिक अन्याय

'गोदान' में अमीर और गरीब, जमींदार और किसान, तथा शोषक और शोषित के बीच का टकराव बार–बार उभरता है। यह सामाजिक ढांचा आज भी मौजूद है, जहाँ आर्थिक असमानता लगातार बढ़ रही है।

वर्तमान संदर्भ

आज के समय में भी अमीर और गरीब के बीच की खाई चौड़ी होती जा रही है। कॉर्पोरेट्स और पूँजीपति वर्ग का वर्चस्व, आम आदमी की समस्याओं को पीछे धकेल देता है। यही गोदान की मूल भावना है — 'शोषण और असमानता के विरुद्ध प्रतिरोध।'

निष्कर्ष

मुंशी प्रेमचंद का 'गोदान' उपन्यास न केवल एक महान साहित्यिक रचना है, बल्कि भारतीय समाज का गहन और यथार्थ चित्रण भी है। इस उपन्यास के माध्यम से प्रेमचंद ने कृषक जीवन की त्रासदी, सामाजिक विषमता, धार्मिक आडंबर, जातिगत भेदभाव, नारी उत्पीड़न और नैतिक पतन जैसे मुद्दों को अत्यंत सजीवता से प्रस्तुत किया है।

वर्तमान समय में जब भारत तेजी से आर्थिक प्रगति और तकनीकी विकास की ओर बढ़ रहा है, तब भी समाज के एक बड़े तबके — विशेषकर ग्रामीण और कृषक वर्ग — को आज भी वे ही समस्याएँ जकड़े हुए हैं, जो 'गोदान' के समय में थीं। किसानों की आत्महत्याएँ, ऋण का बोझ, शिक्षा और स्वास्थ्य की कमी, महिलाओं के साथ असमानता और जातीय असंतुलन आज भी ज्यों के त्यों मौजूद हैं।

इस दृष्टि से 'गोदान' आज केवल अतीत की कहानी नहीं, बल्कि वर्तमान की चेतावनी है। यह उपन्यास हमें समाज की गहराइयों में झांकने, सच्चाई को समझने और सुधार की दिशा में सोचने को प्रेरित करता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि 'गोदान' की प्रासंगिकता समय के साथ समाप्त नहीं हुई, बल्कि समय के साथ और भी अधिक प्रखर और आवश्यक हो गई है। जब तक समाज में समानता, न्याय और आत्मसम्मान की स्थापना नहीं होती, तब तक 'गोदान' की आवाज़ गूंजती रहेगी।

संदर्भ सूची

1. प्रेमचंद, मुंशी – गोदान, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
2. रामविलास शर्मा – प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. नामवर सिंह – कहानी नई कहानी, राजकमल प्रकाशन।
4. डॉ. लक्ष्मी नारायण सुधांशु – प्रेमचंद का यथार्थवादी दृष्टिकोण, साहित्य भवन।
5. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी – साक्षात्कार और समीक्षा, वाणी प्रकाशन।
6. हरिशंकर परसाई – साहित्य का समाजशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन।
7. आधुनिक संदर्भ में गोदान की समीक्षा – भारतीय साहित्य शोध पत्रिका, अंक 4, वर्ष 2022।
8. डॉ. रमेशचंद्र शाह – प्रेमचंद और आज का भारत, हिंदी साहित्य अकादमी, भोपाल।
9. भारत में कृषक आत्महत्याओं पर सरकारी रिपोर्ट दृ राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB), भारत सरकार, नवीनतम संस्करण।
10. विश्व बैंक रिपोर्ट – भारत में ग्रामीण विकास और कृषि संकट पर रिपोर्ट, 2023।